स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी पत्रकारित

डॉ० पूनम भारद्वाज
अध्यक्ष
हिंदी विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय, हापुड
ईमेलः poonambhardwajdr@gmail.com

सारांश

भारत के प्रमुख आंदोलनों में भारतीय प्रेस की प्रभावी भूमिका रही है। पंडित माखनलाल चतुर्वेदी, मुंशी प्रेमचंद, गणेश शंकर विद्यार्थी ना सिर्फ साहित्यकार थे, बल्कि बड़े पत्रकार और संपादक भी थे। उनके लेखों और प्रकाशकों ने लोगों के मन में देशभकित का जज्बा भरा। अंग्रेजों ने प्रेस को काबू में रखने के लिए समय–समय पर कानून तैयार किए लेकिन भारतवासियों का साहस कम नहीं कर पाए। विभिन्न आन्दोलनों की कामयाब में समाचार पत्रों की अहम भूमिका रही। कई पत्रों ने स्वाधीनता आन्दोलन में प्रवक्ता का रोल निभाया। आजादी के आन्दोलन में भाग ले रहा हर आम–ओ–खास व्यक्ति कलम की ताकत से वाकिफ था। हमारे अनेक महापुरुष सीधे–सीधे तौर पर पत्र–पत्रिकाओं से जुड़े हुए थे और नियमित लिख रहे थे। जिसका असर देश के दूर–सुदूर गांवों में रहने वाले हमारे देशवासियों पर पड़ रहा था। अंग्रेजी सरकार को इस बात का अहसास पहले से ही था, इसलिए उन्होंने शुरू से ही प्रेस के दमन की नीति अपनाई। अनेक दैनिक, साप्ताहिक व पाक्षिक पत्रों तथा जनवादी पत्रिकाओं ने आहिस्ता–आहिस्ता लोगों में सोयी हुई देशभक्ति की भावना को जगाया और क्रांति का आह्वान किया। तत्कालीन अनेक पत्रिकाएं और समाचार–पत्र क्रांतिकारी तेवर और राजनैतिक चेतना फैलाने वाले थे। जिस कारण दमन, नियंत्रण के दुष्चक्र से गुजरते हुए उन्हें कई प्रेस अधिनियमों का सामना करना पड़ा और वे अंगेजी सरकार की टेढ़ी निगाह के शिकार हुए। उन्हें प्रतिबंध और जुर्माना का भी सामना करना पड़ा। कुछ संपादकों को कारावास भी भोगना पड़ा। इस प्रकार स्वाधीनता आंदोलन में भारतीय पत्रकारिता का अविस्मरणीय योगदान है।

मुल बिन्दु

पत्रकारिता, समाचार–पत्र, पत्र–पत्रिकाओं, अंग्रेजी सरकार, स्वाधीनता, आजादी, आन्दोलन।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 04.08.2022
Approved: 16.09.2022

डॉ० पूनम भारद्वाज

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी पत्रकारित

RJPP Apr.22-Sept.22,
Vol. XX, No. II,

pp.278-281
Article No. 35

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2022-vol-xx-no-2

पत्रकारिता जनसंचार का सशक्त माध्यम है। जो समाज को जागृत करके उसमें उत्साह है और चेतना का निर्माण करता है। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान व्यक्तियों को जागरूक करने में पत्रकारिता का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। हिंदी पत्रकारों ने समाचार पत्रों में अपनी कलम के बल पर ऐसा माहौल तैयार किया कि सारा देश एक होकर अंग्रेजी सरकार के शोषण, अनयाय औश्र दमनकारी नीतियों का विरोध करने के लिए एक साथ खड़ा हो गया। अकबर इलाहाबादी की पंक्तियां–

''इससे सारे देश में एक लहर सी पैदा हो गई। हर कोने से समाचार पत्र और पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ हो गया। देश प्रेमियों ने समाचार पत्र का प्रकाशन एक मिशन के रूप में शुरू कर दिया। भारत में पुर्तगालियों के माध्यम से 1556 में प्रेस का प्रयोग आरंभ किया गया। जिसे सर्वप्रथम गोवा में स्थापित किया गया। सन् 1557 में भारत में सर्वप्रथम 'ट्रकत्रिनिक्रिटामो' नामक पुस्तक प्रकाशित की गई।[1] भारत में प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत भारतीय लोगों के जीवन में एक क्रांतिकारी घटना थी। उनमें राष्ट्रीय चेतना के जागरण और विकास ने राष्ट्रवादी प्रेस को जन्म दिया। भारतीय प्रेस ने 1870 ई० के दशक में अपनी जड़ें फैलाना शुरू कर दिया था। 1870 से 1918 के दौरान प्रतिष्ठित और निडर पत्रकारों ने कई शक्तिशाली समाचार पत्रों की शुरूआत की। भारत में प्रथम समाचार पत्र जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने कलकत्ता से बंगाल गजट अंग्रेजी भाषा में 29 जनवरी 1780 ई० में प्रकाशित किया था। इसके बाद 1785 में 'मद्रास कुरियर', 1789 में 'बाम्बे गजट', 'द कुरियर', 1791 में 'बंगाल जर्नल', 'इंडियन वर्ल्ड', 'कोलकता क्रॉनिकल' जैसे समाचार पत्रों की शुरूआत हुई। हिन्दी का प्रथम समाचार पत्र 'उदंत–मार्तण्ड' भी कलकता से 1826 में ही प्रकाशित हुआ था। देशभर में पत्रकारिता के शंखनाद से भारत में जनजागरण हुआ और इसी सामूहिक चेतना ने भारतीयों को ब्रिटिश राज के खिलाफ खड़ा कर दिया।[2]''

18वीं शती के अंतिम चरण में इस देश के तीन प्रांत–बंगाल, मद्रास और मुंबई में अंग्रेजी भाषा में साप्ताहिक और मासिक पत्र निकलने लगे थे। तब तक दैनिकों का युग नहीं आया था और न ही भारतीय भाषाओं में कोई पत्र प्रकाशित होता था। [3] भारत में क्रांतिकारी आंदोलन बंदूक और बम के साथ नहीं बल्कि समाचार पत्रों के जन्म के साथ हुआ। ये क्रांतिकारी पढ़े–लिखे युवक थे। इन्होंने स्कूलों, धार्मिक संस्थाओं, राजनीतिक अखाड़ों, सार्वजनिक सभाओं औश्र पत्र–पत्रिकाओं में अपने विचारों का प्रचार किया। इस श्रृंखला की प्रथम कड़ी में 'युगांतर' का नाम आता है। जिसका प्रकाशन एवं संपादन श्री अरविंद घोष के छोटे भाई वीरेंद्र कुमार घोष ने किया और श्री भूपेंद्र नाथ दत्ता तथा श्री अविनाश भट्टाचार्य की सहायता से इसे प्रकाशित किया। [4]

राष्ट्रीय समाचार–पत्र अपनी मान मर्यादा की चिंता किए बिना, अपने पथ से कभी भी विचलित नहीं हुए। ''पत्रकारों के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जाता है''– महादेवी वर्मा जी द्वारा कहे गए वाक्य का एक–एक शब्द स्वाधीनता संग्राम में पत्रकारों की भूमिका को सपष्ट करता है। 1857 में हुई आजादी की प्रथम क्रांमि हो या उसके बाद का पूरा स्वाधीनता आंदोलन, जिसके फलस्वरूप सन् 1947 में हमको आजादी मिली। भारत के प्रमुख आंदोलनों में भारतीय प्रेस की प्रभावी भूमिका रही है। पंडित माखनलाल चतुर्वेदी, मुंशी प्रेमचंद, गणेश शंकर विद्यार्थी ना सिर्फ साहित्यकार थे, बल्कि बहुत बड़े पत्रकार और संपादक भी थे। उनके लेखों और प्रकाशकों ने लोगों के मन में देशभक्ति का जज्बा भरा। अंग्रेजों ने प्रेस को काबू में रखने के लिए समय–समय पर कानून तैयार किए लेकिन भारतवासियों का साहस कम नहीं कर पाए।

बीसवीं सदी के दूसरे–तीसरे दशक में सत्याग्रह आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रचार–प्रसार और उन आन्दोलनों की कामयाबी में समाचार पत्रों की अहम भूमिका रही। कई पत्रों ने स्वाधीनता आन्दोलन में प्रवक्ता का रोल निभाया। आजादी के आन्दोलन में भाग ले रहा हर आम–ओ–खास कलम की ताकत से वाकिफ था। राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी, मौलाना अबुल कलाम आजाद, बाल गंगाधर तिलक, पंडित मदनमोहन मालवीय, बाबा साहब अम्बेड़कर जैसे महापुरुष सीधे–सीधे तौर पर पत्र–पत्रिकाओं से जुड़े हुए थे और नियमित लिख रहे थे। जिसका असर देश के दूर–सुदूर गांवों में रहने वाले हमारे देशवासियों पर पड़ रहा था। अंग्रेजी सरकार को इस बात का अहसास पहले से ही था, इसलिए उन्होंने शुरू से ही प्रेस के दमन की नीति अपनाई। समाचार सुधा वर्षण, अभ्युदय, शंखनाद, हलधर, सत्याग्रह समाचार, युद्धवीर, क्रांतिवीर, स्वदेश, नया हिन्दुस्तान, कल्याण, हिंदी प्रदीप, बुन्देलखण्ड केसरी, मतवाला जैसे दैनिक साप्ताहिक और पाक्षिक पत्रों ने देशवासियों में निरंतर जोश जाग्रत रखा। सरस्वती, विप्लव, अलंकार, चांद, हंस, प्रताप, सैनिक, क्रांति, बलिदान, वालिंट्यर आदि जनवादी पत्रिकाओं ने आहिस्ता–आहिस्ता लोगों में सोयी हुई देशभक्ति की भावना को जगाया और क्रांति का आह्वान किया। जिस कारण उन्हें सत्ता का कोप–भाजन भी बनना पड़ा। दमन और नियंत्रण के दुष्चक्र से गुजरते हुए उन्हें कई प्रेस अधिनियमों का सामना करना पड़ा। 'वर्तमान पत्र' में पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा लिखा 'राजनीतिक भूकम्प' शीर्षक लेख, 'अभ्युदय' का भगत सिंह विशेषांक, किसान विशेषांक, 'नया हिन्दुस्तान' के साम्राज्यवाद, पूंजीवाद और फांसीवादी विरोधी लेख, 'स्वदेश' का विजय अंक, 'चांद' का अछूत अंक, फांसी अंक, 'बलिदान' का नववर्षांक, 'क्रांति' के 1939 के सितम्बर, अक्टूबर अंक, 'विप्लव' का चंद्रशेखर अंक अपने क्रांतिकारी तेवर और राजनैतिक चेतना फैलाने वाले थे। इसी कारण वे अंग्रेजी सरकार की टेढ़ी निगाह के शिकार हुए और उन्हें प्रतिबंध और जुर्माना का भी सामना करना पड़ा। कुछ संपादकों को कारावास भी भोगना पड़ा। इस प्रकार स्वाधीनता आंदोलन में भारतीय पत्रकारिता का अविस्मरणीय योगदान है। देशभक्ति की कविताओं, गीतों और अखबारों में प्रकाशित लेखों ने ब्रिटिश सरकार को बेचैन कर दिया था। समाचार पत्रों के माध्यम से भारतीय लोग देश में चल रही गतिविधियों से खुद को अवगत कराते रहे। समाचार पत्रों में प्रकाशित लेख ब्रिटिश सरकार के लिए किसी चुनौती से कम नहीं थे। इसी के चलते अनेक समाचार पत्रों पर अंग्रेजों ने प्रतिबंध लगा दिया था। दमन की पराकाष्ठा को चुनौती देते हुए तत्कालीन पत्रकारों ने सशक्त संचार की शक्ति से जनजागरण के कार्य को निरंतर जारी रखा। 'उदंत मार्तंड', 'बंगदूत', 'प्रजा मित्र', 'बुद्धि प्रकाश', 'समाचार सुधावर्षण', 'बनारस अखबार' इत्यादि सामाजिक व साहित्यिक क्षेत्र के महत्वपूर्ण पत्र थे। भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का प्रथम समर सन् 1857 में हुए गदर को माना जाता है। जहां उत्तर भारत के किसानों और सैनिकों ने अंगेज सरकार के विरुद्ध बिगुल फूंका। भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में पत्रकारिता का स्पष्ट जुड़ाव यहीं से देखा जाता है। स्वतंत्रता के अगुआ नेता अजीमुल्ला खाँ ने 1857 में 'पयामे आजादी' नामक पत्र का प्रकाशन किया। 'पयामे आजादी' का प्रकाशन उर्दू भाषा में होता था और आवश्यकता पड़ने पर हिंदी भाषा में भी इसको प्रकाशित किया जाता था। गदर की समाप्ति के बाद यह पत्र बंद हो गया, किंतु इस पत्र ने राष्ट्रवादी पत्रकारिता की पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी। लाला हरदयाल ने जनवरी 1914 के 'गदर' में लिखा था कि हर व्यक्ति 1857 को याद करता है और हर देशवासी का कर्तव्य है कि वह सैनिकों d sfonzg esa "kkfey gksA [5] 'पयामे आजादी' स्वतंत्रता की लड़ाई में भाग लेने वाला पहला पत्र था।

इस पत्र ने अंग्रेज सरकार के विरुद्ध अपनी जबरदस्त आवाज उठाई। इस पत्र ने हिंदू–मुसलमान सभी को क्रांति के लिए प्रेरित किया था। इस पत्र से अंग्रेज सरकार इतीन विचलित हुई कि यह पत्र जिसके पास से भी प्राप्त होता था, उसे कठोर यातनाएं दी जाती थी। 'पयामे आजादी' में क्रांति के नायक बहादुर शाह जफर के उद्‌बोधन भी छपते थे। 'पयामे आजादी' के एक संपादकीय में क्रांति की आवाज स्पष्ट देखी जा सकती है ''..... भाइयों! दिल्ली में फिरंगियों के साथ आजादी की जंग हो रही है। खुदा की दुआ से हमने उन्हें पहली शिकस्त दी है। उससे वे इतना घबरा गए हैं जितना की पहले ऐसी दस शिकस्तों से भी न घबराते। बेशुमार हिंदुस्तानी बहादुरी के साथ दिल्ली में आकर जमा हो रहे हैं ऐसे मौके पर आपका आना लाजिमी है आप हमारे कान इस तरह आपकी ओर लगे हैं, जिस तरह रोजेदारों के कान मुआज्जिन के अजान की तरफ लगे रहते हैं। हमारी आँखें आपके दीदार की प्यासी हैं गर वहां खाना खा रहे हों तो हाथ यहाँ आकर धोइये। हमारा बादशाह आपका इश्तकबाल करेगा।''

वास्तव में समय–समय पा आंदोलनों में शिथिलता के कारण जो शून्यता की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी, उसमें प्रेस ने ही नौजवानों में नई ऊर्जा, नई शक्ति और नया जोश प्रदान किया। 'पयामे आजादी' में ही बहादुर शाह 'जफर' का आजादी के लिए एक उद्‌बोधन प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने कहा कि ''हिंदुस्तान के हिंदुओं और मुसलमानों! उठो, भाईयों उठो, खुदा ने इंसान को जितनी बरकतें अदा की हैं, उनमें सबसे कीमती बरकत आजादी है।''[6]

स्वतंत्रता पूर्व की हिंदी पत्रकारिता ने राष्ट्रीय आंदोलन को गति, दिशा और शक्ति प्रदान की। आज इन पत्रकारों और वीरों के अथक प्रयासों के परिणाम स्वरूप हम आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रहे हैं–

''आजादी का अमृत महोत्सव हम मिलकर सभी मनाएंगे।
भारत मां के चरणों में सब मिलकर शीश झुकाएंगे।।''

संदर्भ

1. कुमार, डॉ० अवधेश. हिंदी की साहित्य पत्रकारिता. पृष्ठ **33.**
2. पार्थसारथी, रंगास्वामी. (2009). जर्नलिज्म इन इंडिया. स्टरलिंग प्रकाशन प्राइवेट लिमिटिड. पृष्ठ **20–21.**
3. शर्मा, ओ०पी०. पत्रकारिता और उसके स्वरूप प्रश्न 14.
4. वर्मा, एम०एल०. (2006). स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी साहित्य का इतिहास भाग 2 प्रवीण प्रकाशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **570.**
5. वैदिक, वेद प्रताप. (1997). हिंदी पत्रकारिताः विविध आयाम. कमला प्रकाशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **173.**
6. तिवारी, अर्जुन. (2013). हिंदी पत्रकारिता का इतिहास. वाणी प्रकाशनः नई दिल्ली. आवृत्ति पृष्ठ **129.**